

श्रावण पुत्रदा एकादशी कथा in Hindi

प्राचीन काल में महिरूपति नगरी में महीति नामक एक राजा था। धार्मिक ग्रंथों और पुरानी मान्यताओं के अनुसार, वह एक धर्मात्मा शासक था और स्वभाव में बहुत शांत, बुद्धिमान और उदार था। हालाँकि उसके पास सब कुछ था, फिर भी राजा के कोई संतान नहीं थी। संतान न होने के कारण वह बहुत दुखी रहता था। एक दिन, राजा ने अपने राज्य के सभी ऋषियों, मुनियों, संन्यासियों और विद्वानों को बुलाया और उनसे संतान प्राप्ति के उपाय पूछे। राजा की बात सुनकर सभी ने कहा, "हे राजन! आपने अपने पिछले जन्म में सावन माह की एकादशी के दिन अपने तालाब से एक गाय को पानी नहीं पीने दिया था। इससे नाराज होकर गाय ने आपको संतानहीन होने का श्राप दिया था।

यही कारण है कि आप अब तक संतान सुख से वंचित हैं।" इसके बाद, सभी ऋषि-मुनियों ने कहा, "हे राजन! अगर आप और आपकी पत्नी पुत्रदा एकादशी का व्रत रखें तो इस श्राप से मुक्ति पा सकते हैं। इसके बाद आपके घर में बच्चे की किलकारियाँ गूँज सकती हैं।" यह सुनकर राजा ने कहा, "मैं अपनी पत्नी के साथ अवश्य पुत्रदा एकादशी का व्रत करूँगा।"

फिर राजा ने सावन माह में आने वाली पुत्रदा एकादशी का व्रत रखा और इस व्रत के प्रभाव से वह श्राप से मुक्त हो गया। बाद में उसकी पत्नी गर्भवती हुई और एक प्रतिभाशाली पुत्र को जन्म दिया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और तब से वह हर साल पुत्रदा एकादशी का व्रत करने लगा। कहा जाता है कि जो व्यक्ति पूरे मन और भक्ति से यह व्रत करता है, भगवान विष्णु उसकी सभी इच्छाएँ पूरी करते हैं।

Shrawan Putrada Ekadashi Vrat Katha in English

In ancient times, there was a king named Mahiti in the city of Mahirupati. According to religious scriptures and old beliefs, he was a righteous ruler, known for his calm, wise, and generous nature. Although he had everything, the king had no children, which caused him deep sorrow. One day, he summoned all the sages, ascetics, and scholars in his kingdom to ask them for a way to attain a child. After listening to the king, they said, "O King! In your previous birth, on the day of Ekadashi in the month of Shravan, you did not allow a cow to drink water from your pond. Enraged, the cow cursed you to be childless.

This is why you have been deprived of the joy of having children." After this, the sages said, "O King! If you and your queen observe the fast of Putrada Ekadashi, you can be freed from this curse. Afterward, your home may be blessed with the laughter of a child." Hearing this, the king replied, "I will certainly observe the Putrada Ekadashi fast with my wife."

Then, the king observed the fast of Putrada Ekadashi, which falls in the month of Shravan, and through the power of this fast, he was freed from the curse. Later, his wife became pregnant and gave birth to a talented son. The king was overjoyed and from that time onward, he observed the Putrada Ekadashi fast every year. It is said that anyone who performs this fast with full devotion, Lord Vishnu fulfills all their wishes.